



## गरीबी पर खाद्य सुरक्षा का सकारात्मक प्रभाव

मोनू कुमार

रिसर्च स्कॉलर अर्थशास्त्र विभाग

महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

### शोध सार

खाद्य सुरक्षा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक एवं मानव विकास संबंधी स्थिरता का एक महत्वपूर्ण आधार मानी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक, सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराना है, ताकि कोई भी व्यक्ति भूख, कुपोषण तथा खाद्य अभाव जैसी समस्याओं से प्रभावित न हो। विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देश में, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग अभी भी आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से संबंधित है, भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएँ समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों को खाद्यान्न उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से गरीब परिवारों को रियायती दरों पर अनाज प्रदान किया जाता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होता है तथा खाद्य असुरक्षा की समस्या कम होती है। इसके अतिरिक्त, मध्याह्न भोजन योजना ने विद्यालयों में बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने, कुपोषण कम करने तथा शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सकारात्मक प्रभाव डाला है। विभिन्न शोधों एवं अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि खाद्य सुरक्षा योजनाओं ने गरीबी उन्मूलन, पोषण स्तर में सुधार, सामाजिक समानता तथा मानव विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हालाँकि, खाद्य सुरक्षा के समक्ष भ्रष्टाचार, वितरण प्रणाली में पारदर्शिता की कमी, जनसंख्या वृद्धि तथा भंडारण संबंधी समस्याएँ अभी भी चुनौती बनी हुई हैं। इसलिए आवश्यक है कि सरकार आधुनिक तकनीक, डिजिटल निगरानी प्रणाली एवं प्रभावी नीतियों के माध्यम से इन योजनाओं को और अधिक सुदृढ़ बनाए, ताकि देश का प्रत्येक नागरिक खाद्य सुरक्षा का लाभ प्राप्त कर सके।

### कुंजी शब्द

कुपोषण, गरीबी उन्मूलन, मध्याह्न भोजन योजना, पोषण सुधार, सामाजिक समानता, खाद्य असुरक्षा, मानव विकास



मोनू कुमार

[monu130797@gmail.com](mailto:monu130797@gmail.com)

Paper Received: 13/05/2026

Paper Revised: -----

Paper Accepted: 23/05/2026

## प्रस्तावना

गरीबी एक बहुआयामी समस्या है, जो केवल आय की कमी तक सीमित नहीं है, बल्कि भोजन, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव से भी जुड़ी होती है। खाद्य सुरक्षा का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को हर समय पर्याप्त एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो, जिससे वह स्वस्थ एवं सक्रिय जीवन व्यतीत कर सके।

भारत में लंबे समय से गरीबी और भूख गंभीर चुनौतियाँ रही हैं। इन्हें दूर करने के लिए सरकार ने विभिन्न खाद्य सुरक्षा योजनाएँ लागू कीं। सार्वजनिक वितरण प्रणाली, अंत्योदय अन्न योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना तथा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम जैसी योजनाओं ने गरीब परिवारों को सस्ती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया। इन योजनाओं का प्रभाव गरीबी कम करने में सकारात्मक रूप से देखा गया है।

## खाद्य सुरक्षा की अवधारणा

संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार खाद्य सुरक्षा वह स्थिति है जिसमें सभी लोगों को हर समय पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन तक पहुँच प्राप्त हो।

## खाद्य सुरक्षा के चार प्रमुख आयाम हैं-

1. भोजन की उपलब्धता
2. भोजन तक पहुँच
3. भोजन का उचित उपयोग
4. स्थायित्व

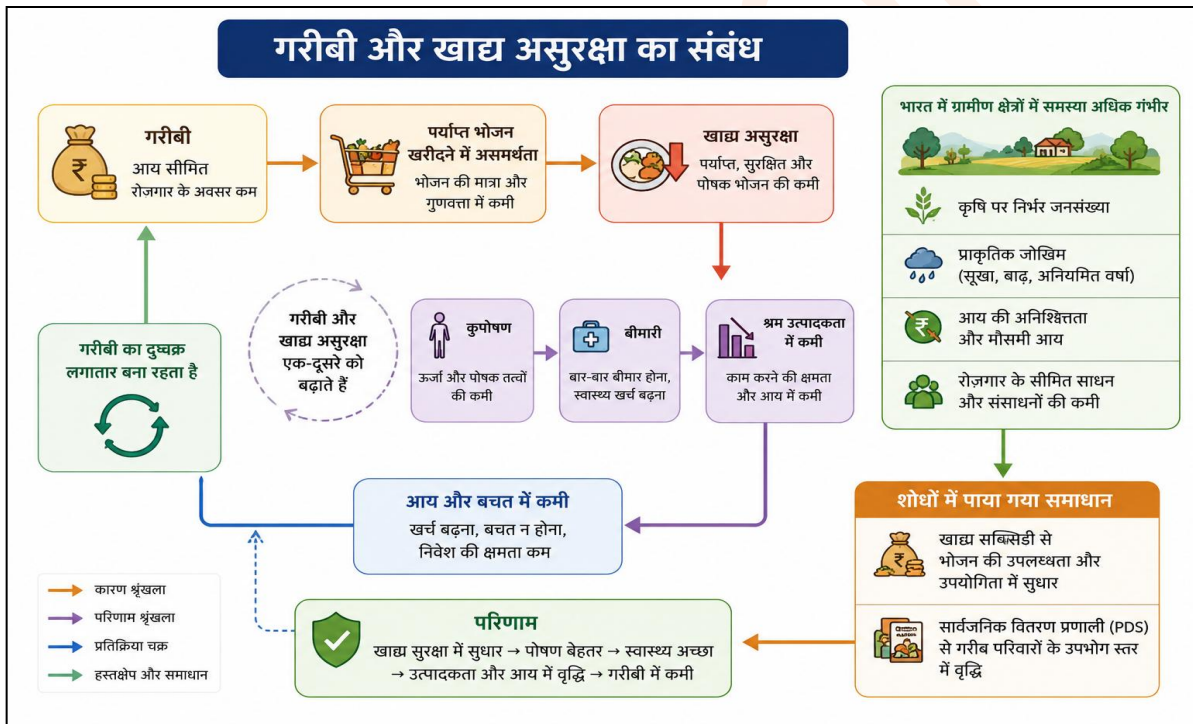


यदि इन चारों आयामों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए तो गरीबी और भूख दोनों में कमी लाई जा सकती है।

## गरीबी और खाद्य असुरक्षा का संबंध

गरीबी और खाद्य असुरक्षा एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। गरीब परिवारों की आय सीमित होने के कारण वे पर्याप्त भोजन खरीदने में सक्षम नहीं होते। इससे कुपोषण, बीमारी और श्रम उत्पादकता में कमी आती है। परिणामस्वरूप गरीबी का दुष्चक्र लगातार बना रहता है।

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या अधिक गंभीर है, जहाँ कृषि पर निर्भर जनसंख्या प्राकृतिक जोखिमों और आय की अनिश्चितता से प्रभावित होती है। कई शोधों में पाया गया कि खाद्य सब्सिडी और सार्वजनिक वितरण प्रणाली ने गरीब परिवारों के उपभोग स्तर को बढ़ाने में सहायता की।



(The diagram shows the logistic relationship)

## गरीबी पर खाद्य सुरक्षा का सकारात्मक प्रभाव

### 1. भूख और कुपोषण में कमी

खाद्य सुरक्षा योजनाओं ने गरीब परिवारों को सस्ती दरों पर गेहूँ, चावल और अन्य खाद्यान्न उपलब्ध कराए। इससे भूख और कुपोषण में कमी आई। ओडिशा के जठजं क्षेत्रों पर किए गए अध्ययन में पाया गया कि सार्वभौमिक खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों से पोषण स्तर में उल्लेखनीय सुधार हुआ।

## 2. आर्थिक बोझ में कमी

जब गरीब परिवारों को कम कीमत पर खाद्यान्न मिलता है, तो उनकी आय का बड़ा हिस्सा अन्य आवश्यकताओं जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और आवासकृपर खर्च किया जा सकता है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली ने लाखों परिवारों को बाजार मूल्य की तुलना में कम दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराकर उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाया।

## 3. सामाजिक समानता में वृद्धि

खाद्य सुरक्षा योजनाएँ समाज के कमजोर वर्गों कृदलित, आदिवासी, महिलाएँ और बच्चेकृको विशेष लाभ प्रदान करती हैं। इससे सामाजिक असमानता कम होती है और समाज में समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।

## 4. स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार

पर्याप्त पोषण मिलने से लोगों का स्वास्थ्य बेहतर होता है, जिससे उनकी कार्यक्षमता और उत्पादकता बढ़ती है। स्वस्थ व्यक्ति अधिक श्रम कर सकता है और बेहतर आय अर्जित कर सकता है।

अध्ययनों में यह भी पाया गया कि खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों से बच्चों की वृद्धि दर तथा मातृ स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

## 5. ग्रामीण विकास में सहायता

ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा योजनाओं ने गरीब किसानों और मजदूरों को राहत प्रदान की। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में स्थिरता आई और सामाजिक सुरक्षा मजबूत हुई।

# भारत में खाद्य सुरक्षा कार्यक्रम

### ➤ सार्वजनिक वितरण प्रणाली

सार्वजनिक वितरण प्रणाली भारत की सबसे बड़ी खाद्य सुरक्षा योजना है। इसके माध्यम से गरीब परिवारों को रियायती दरों पर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है। विभिन्न शोधों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका स्वीकार की गई है।

➤ **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013**

यह अधिनियम देश की लगभग दो-तिहाई आबादी को खाद्यान्न सुरक्षा प्रदान करता है। इसके तहत पात्र परिवारों को सस्ती दरों पर खाद्यान्न दिया जाता है।

➤ **मध्याह्न भोजन योजना**

यह योजना विद्यालयों में बच्चों को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराकर शिक्षा और पोषण दोनों को बढ़ावा देती है।

➤ **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना**

कोविड-19 महामारी के दौरान इस योजना ने करोड़ों गरीब परिवारों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया, जिससे संकट के समय खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित हुई।

## खाद्य सुरक्षा कार्यक्रमों की चुनौतियाँ

हालाँकि खाद्य सुरक्षा योजनाओं का प्रभाव सकारात्मक रहा है, फिर भी कुछ समस्याएँ मौजूद

- भ्रष्टाचार और रिसाव
- लाभार्थियों की पहचान में त्रुटियों
- भंडारण एवं परिवहन की समस्याएँ
- पोषण की गुणवत्ता की कमी
- ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता का अभाव
- इन समस्याओं के कारण कई पात्र परिवार योजनाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते।

## सुझाव

- ✓ डिजिटल तकनीक के माध्यम से वितरण प्रणाली को पारदर्शी बनाया जाए।
- ✓ खाद्यान्न के साथ पोषणयुक्त खाद्य पदार्थ भी उपलब्ध कराए जाएँ।
- ✓ ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
- ✓ महिलाओं और बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जाए।
- ✓ कृषि उत्पादन और भंडारण क्षमता बढ़ाई जाए।

## निष्कर्ष

खाद्य सुरक्षा गरीबी उन्मूलन का एक प्रभावी साधन है। भारत में लागू विभिन्न खाद्य सुरक्षा योजनाओं ने गरीब परिवारों को आर्थिक राहत, बेहतर पोषण तथा सामाजिक सुरक्षा प्रदान की है। इन योजनाओं ने भूख और कुपोषण में कमी लाने के साथ-साथ सामाजिक समानता और मानव विकास को भी बढ़ावा दिया है।

हालाँकि अभी भी कई चुनौतियाँ मौजूद हैं, परंतु यदि योजनाओं को पारदर्शिता और दक्षता के साथ लागू किया जाए तो खाद्य सुरक्षा गरीबी उन्मूलन की दिशा में और अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकती है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. BMC Nutrition Journal Malnutrition and Poverty in India: Does the Use of Public Distribution System Matter.
2. Science Direct Food Policy Journal Universal Food Security Program and Nutritional Intake
3. ICAR Indian Farming Journal Impact of Public Distribution System on Poverty and Food Security in India.
4. MDPI Journal- The Public Distribution System and Food Security in India.
5. GOV.UK Research Paper- Poverty Under nutrition and Vulnerability in Rural India.
6. दत्त, रूद्र एवं सुंदरम, के.पी.एम. भारतीय अर्थव्यवस्था।
7. मिश्रा एवं पुरी- भारतीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांत।
8. अमर्त्य सेन - Poverty and Famines.
9. भारत सरकार, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट।
10. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013।